ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 111-114

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में ग्रामीण और नगरीय क्षेत्र का तुलनात्मक अध्ययन

रामलेश

असिस्टेन्ट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, बरखू राम वर्मा महिला महाविद्यालय, जोकहरा– लाटघाट, आजमगढ़ (उ0प्र0), भारत

Received- 13.08.2020, Revised- 16.08.2020, Accepted - 19.08.2020 E-mail: - satya4913@gmail.com

सारांश : ***ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था – ग्रामीण समाज का तात्पर्य समुदाय के उस स्वरूप से है, जिसके सदस्यों के बीच प्राथमिक सम्बन्ध अनौपचारिक सम्बन्ध और सरल सम्बन्ध होते है तथा जिनकी आवश्यकताएँ मुख्य रूप से खेती या खेती से जुड़े दूसरे व्यवसायों या दस्तकारी द्वारा पूरी होती है साधारणतया किसी भी देश के आर्थिक विकास और सामाजिक संगठन के लिए ग्रामीण जीवन ही आधार भूत होता है। लेकिन भारत में ग्रामीण समाज का अत्यन्त महत्व है हमारे देश की लगभग 74 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है और जिस देश की रचना में 5 लाख 80 हजार गाँवों का योगदान हो वहाँ ग्रामीण समाज के महत्व को समझा जा सकता हैं।***

कुंजीभूत शब्द– समुदाय, प्राथमिक सम्बन्ध, अनौपचारिक सम्बन्ध, सरल सम्बन्ध, व्यवसायों, दस्तकारी ।

ग्रामीण समाज का मुख्य व्यवसाय कृषि है, कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड़ मानी जाती है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रयासों में कृषि को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण दर्जा मिला है। कृषि क्षेत्रों में लगभग 64 प्रतिशत श्रमिकों को रोजगार मिला हुआ है। इस प्रकार राष्ट्रीय आय का लगभग 28 प्रतिशत कृषि से प्राप्त होता है। देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है देश से होनें वाले निर्यातों का एक बहुत बड़ा भाग कृषि से ही प्राप्त होता है। गैर कृषि क्षेत्रोंमें अधिक मात्रा में उपभोक्ता वस्तुऐं एवं अधिकाधिक उद्योगों को कच्चा माल इसी क्षेत्र द्वारा भेजा जाता है।

भारत में प्राचीन काल से कृषि का अनेक दृष्टिकोण से बड़ा महत्व रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ दशक पूर्व तक भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि से अपनी रोजी रोटी चलाती थी । आज भी कृषि ही देश का सबसे बड़ा उद्योग है यही भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह कृषि ही है जिसनें विश्व के दूसरे सबसे अधिक जनसंख्या वाले देश की जनता को भूखमरी से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश की आर्थिक व्यवस्था अत्यन्त कमजोर थी , और देश अक्सर अकालों तथा महामारियों से ग्रस्त था, परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उसने जिस रणनीति को अपनया, उसमें आत्मनिर्भरता का लक्ष्य सर्वोपरि रहा, और इस (आत्म निर्भरता) की प्राप्ति के लिए कृषि क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया खेतों इस (आत्म निर्भरता) की प्राप्ति के लिए कृषि क्षेत्र को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया खेतो को नयी –नयी तकनीकी और संस्थानात्मक सुधारों के द्वारा अधिकाधिक उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया गया यद्यपि अभी भी भारत मे विभिन्न फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन विकसित देशों की तुलना मे कम है फिर भी कुल उत्पादन की दृष्टि से यह विश्व के बड़े उत्पादकों में से हैं और यदि मानसून कि कृपा निरन्तर बनी रहे तो निकट भविष्य में विश्व का एक बडा निर्यातक देश भी बन सकता है। अब धीरे–धीरे कृषि तकनीकी में सुधार हुआ है, भूमि की प्रति व्यक्ति उत्पादकता बढ़ती जा रही है। अतः इस क्षेत्र में और अधिक ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

नगरीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था – नगरीय समाज में व्यक्तियों के पारम्परिक सम्बन्धों, आर्थिक कियाओं, सामाजिक संगठनों ,जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताऐं, प्रौद्योगिकीय तथा आवास के स्वरुप जैसी विशेषताऐं आदिम और ग्रामीण समाजों से पूर्णतया भिन्न होने के कारण नगरीय समाज को अलग जीवन की विधि के रुप मे देखा जाता है नगरीय समाज को ग्रामीण समाज से अलग करने का वास्तविक आधार सामाजिक संम्बन्धों, व्यावसायिक संरचना तथा परिस्थितिकीय में पायी जाने वाली भिन्नता ही है।

दुर्खिम महोदय, ने नगर को निम्न प्रकार से परिभाशित किया है, "नगर एक ऐसा समाज है जिसके सदस्य सावयवी एकता के द्वारा आपस में बधे है। " नगर में गैर कृषि व्यवस्था की प्रधानता देखने को मिलती है। कृषि के अतिरीक्त लोहा उद्योग ,कपडा उद्याोग, सीमेट उद्योग ,चमड़ा उद्योग इत्यादि विभिन्न प्रकार के उद्योगों की प्रधानता नगरों मे पायी जाती है ।

प्राचीनकाल से ही भारत एक बी निर्माता देश रहा है। सिन्दु घाटी सभ्यता के दौरान भारत मे मृद भाड़, धातु उद्योग तथा भवन निर्माण उद्योग उन्नति अवस्था में था।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

मध्य काल मे देश के औद्योगिक विकास में और गति पकड़ी। भारत में ढाका के मल मल छीट की विश्व भर में भारी मांग थी। भारतीय रेशम की रोम में इतनी अधिक माग थी कि रोमवासी कीमत के रुप मे उन वस्त्रों के भार के बराबर सोना देते थे। मध्य काल तक भारतीय उद्योग का विकास निरन्तर होता रहा और विष्व बाजार मे भारतीय वस्तुऐं अपनी साख बनाऐ रखने मे सफल रही , परन्तु देश मे अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ उनका ह्रास प्रारम्भ हो गया। देश का औद्योगिक आधार ही समाप्त कर दिया गया और धीरे–धीरे वह बी निर्मित वस्तुओ का आयातक बन गया ।

सन् 1600 में इस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना के पश्चात् से सन् 1757 तक भारत का कम्पनी के साथ व्यवहार लाभ कारी रहा क्योंकि इस्ट इंडिया कम्पनी बहुमूल्य धातुओं के बदले में यहाँ बने कपड़ें तथा मसाले खरीदती थी। भारतीय वस्त्रों की इग्लैंण्ड तथा यूरोपीय देशों में भारी माँग थी, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मशीनों द्वारा आधारित आधुनिक उद्योगों की स्थापना प्रारंम्भ हो गयी। भारत में भारत सूती वस्त्र मिल कलकत्ता के निकट घुसरी नामक स्थान पर 1818 में स्थापित हो चुकी थी । सन् 1906 में कोयला खान उद्योगों में लगभग एक लाख श्रमिक कार्यरत है लोहा और इस्पात के कारखाने, नमक अभ्रक और शोरे जैसे खनिज आदि उद्योग भी उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के प्रारम्भ में स्थापित होने लगे थे। देश के औद्योगिक आधार की इस कमी को पहचान कर भारतीय उद्योग के पुरोधा जमशेद जी टाटा ने 1906 में जमशेद पुर में देश का पहला इस्पात कारखाना टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी स्थापित किया। 1930 से 1947 तक का समय सुती वस्त्र उद्योग के लिए अत्यधिक लाभदायक रहा क्यों कि इस दौरान महात्मा गाँधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन को पराकास्ठा पर पहुचा दिया था। और स्वदेशी वस्तुओं के उपभोग को आजादी प्राप्त की दिशा में अति महत्वपूर्ण कदम माना था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में अपने आर्थिक विकास का मन चाहा मार्ग चुना देश के नीति निर्माताओं ने कृषि के साथ–साथ उद्योगों के भी तीव्र विकास का निर्णय लिया इसके लिए सरकार ने नियोजित विकास की नीति अपनायी और सन 1950 में योजना आयोग का गठन किया गया, अप्रैल 1951 से भारत योजना काल प्रारम्भ हुआ।

इस प्रकार लगभग 50 वर्षो के योजनागत विकास के माध्यम से भारत ने अपने औद्योगिक आधार को काफी विस्तृत एवं मजबूत बना लिया हैं और विश्व के देश प्रथम औद्योगिक राष्ट्रों में अपना स्थान बना लिया आठवीं पंचवर्षीय योजना में सरकार की औद्योगिक तथा अन्य आर्थिक नीतियों में भारी परिवर्तन से इस दिशा में और अधिक प्रगति हाने की सम्भावना बढ़ गयी हैं।

ग्रामीण समुदाय में परम्परागत रुप से शिक्षा के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए कोई विशिष्ट संस्थाएँ नही थी ग्रामीण कृषि उद्योग व्यवसाय का ज्ञान भी पाठशालाओं में नहीं दिया जाता था। शिक्षा का यह ज्ञान परिवार मे अनुभवी एवं वयोवृद्ध सदस्यों द्वारा ही यह ज्ञान दूसरों को प्रदान किया जा सकता था। ब्रिटिश काल में शिक्षा के स्वरुप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आरम्भ हो गये थे इस काल में शिक्षा का प्रसार मुख्यतः नगरों में ही हुआ यह शिक्षा प्रणाली महँगी होने के कारण गाँवों में अधिकांश व्यक्ति इसका भरपूर लाभ नही उठा सकते थे। फिर भी गाँव में मध्य वर्गीय कुछ लोगों को यह षिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला ।

मानव सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा तथा अद्यतन स्वरूप मानव के बैद्धिक चातुर्य का परिणाम है। निः संदेह शिक्षा ने इस सन्दर्भ में इस क्रम में निर्णायक भूमिका का निर्वाह की है। क्योंकि शिक्षा का सम्बन्ध प्रत्यक्षतः संस्कारों एवं विकाश उन्मुंखी प्रयासों से शिक्षा का यह ज्ञान परिवार में अनुभवी एवं वयोवृद्ध सदस्यों द्वारा ही यह ज्ञान दूसरों को प्रदान किया जा सकता था। ब्रिटिश काल में शिक्षा के स्वरुप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आरम्भ हो गये थे इस काल में शिक्षा का प्रसार मुख्यतः नगरों में ही हुआ यह शिक्षा प्रणाली महँगी होने के कारण गाँवों में अधिकांश व्यक्ति इसका भरपूर लाभ नही उठा सकते थे। फिर भी गाँव में मध्य वर्गीय कुछ लोगों को यह शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला ।

मानव सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा तथा अद्यतन स्वरूप मानव के बैद्धिक चातुर्य का परिणाम है। निः संदेह शिक्षा ने इस सन्दर्भ में इस क्रम में निर्णायक भूमिका कानिर्वाह की है। क्योकि शिक्षा का सम्बन्ध प्रत्यक्षतः संस्कारों एवं विकाश उन्मुंखी प्रयासों से है।

ग्रामीण समाजों में शिक्षा का ज्ञान वयोवृद्ध एवं अनुभवी लोगों द्वारा प्राप्त किया जाता था। आधुनिक परिवेश में ग्रामीण समाज में यह शिक्षा आज ग्रामीण लोगों को विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रदान की जा रही हैं। शिक्षा का साक्षरता प्रतिशत भी अब बढ़ते हुए क्रम में दिखाई दे रहा है। ग्रामीण समाज में षिक्षा के प्राथमिक स्तर को बढ़ाने के लिए निःषुल्क शिक्षा भी प्रदान की जा रही है। जिससे ग्रामीण समाज में साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है। विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार मुख्यतः नगरों में ही हुआ यह शिक्षा प्रणाली

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

महँगी होने के कारण गाँवों में अधिकांश व्यक्ति इसका भरपूर लाभ नही उठा सकते थे। फिर भी गाँव में मध्य वर्गीय कुछ लोगों को यह शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला।

मानव सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा तथा अद्यतन स्वरूप मानव के बैद्धिक चातुर्य का परिणाम है। निः संदेह शिक्षा ने इस सन्दर्भ में इस क्रम में निर्णायक भूमिका का निर्वाह की है। क्योंकि शिक्षा का सम्बन्ध प्रत्यक्षतः संस्कारों एवं विकाश उन्मुंखी प्रयासों से शिक्षा का यह ज्ञान परिवार में अनुभवी एवं वयोवृद्ध सदस्यों द्वारा ही यह ज्ञान दूसरों को प्रदान किया जा सकता था। ब्रिटिश काल में शिक्षा के स्वरुप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आरम्भ हो गये थे इस काल में शिक्षा का प्रसार मुख्यतः नगरों में ही हुआ यह शिक्षा प्रणाली महँगी होने के कारण गाँवों में अधिकांश व्यक्ति इसका भरपूर लाभ नही उठा सकते थे। फिर भी गाँव में मध्य वर्गीय कुछ लोगों को यह शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला ।

मानव सभ्यता और संस्कृति की विकास यात्रा तथा अद्यतन स्वरूप मानव के बैद्धिक चातुर्य का परिणाम है। निः संदेह शिक्षा ने इस सन्दर्भ में इस क्रम में निर्णायक भूमिका कानिर्वाह की है। क्योकि शिक्षा का सम्बन्ध प्रत्यक्षतः संस्कारों एवं विकाश उन्मुंखी प्रयासों से है।

ग्रामीण समाजों में शिक्षा का ज्ञान वयोवृद्ध एवं अनुभवी लोगों द्वारा प्राप्त किया जाता था। आधुनिक परिवेश में ग्रामीण समाज में यह शिक्षा आज ग्रामीण लोगों को विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रदान की जा रही हैं। शिक्षा का साक्षरता प्रतिशत भी अब बढ़ते हुए क्रम में दिखाई दे रहा है। ग्रामीण समाज में शिक्षा के प्राथमिक स्तर को बढ़ाने के लिए निःशुल्क शिक्षा भी प्रदान की जा रही है। जिससे ग्रामीण समाज में साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है। विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय संस्थायों में भी ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विश्व बैक द्वारा बच्चों को दोपहर में भोजन की भी व्यवस्था की गयी है जिससे उनका स्वास्थ्य भी बनारहे और वे षिक्षा में रूचि लें। इस प्रकार ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सर्वशिक्षा अभियान एवं ऐसे अनेक अभियानों को सरकार क्रियान्वित कर रही है। जिससे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का सर्वांगीण विकाश सम्भव हो सकें ।

नगरीय समाज में शिक्षा को व्यवसाय से जोड़ दियागया है व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से नगरो में विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थान चलाये जा रहे है। इन संस्थानों से नगरो में रहने वाले लोग व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी जीविका को चलाने के लिए नगरों में व्यवसाय को परम्परागत रूप से देखा जा सकता है व्यवसाय का कार्य भार नयी पीढ़ी के द्वारा कुशलता के साथ संचालन देखा जा सकता है। ग्रामीण समाज के प्रतिभावान बच्चों के लिए राजीव गाँधी के प्रधानमंत्रीत्व काल में जवाहर नवोदय विद्यालय की स्थापना की गयी जिसमें ग्रामीण बच्चों के लिए 75 प्रतिशत सीटें आरक्षित होती हैं और 25 प्रतिशत सीट नगरीय या अन्य सभी बच्चों के लिए होती हैं इससे ग्रामीण प्रतिभा को बढ़ाने में सहयोग प्राप्त हुआ है।

ग्रामीण समुदाय में जाति संस्तरण का महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें उच्च जातियों कों अधिक अधिकार प्राप्त थे। निम्न जातियाँ स्वतन्त्र रूप से सुरक्षित नही थी लेकिन वर्तमान समय में इस संस्करण में परिवर्तन आया है और निम्न जातियॉ अपनी सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक स्थिति में सुधाार करके जातीय सस्तरण में अब वे अपने को ऊँचा उठाने का प्रयास कर रही है। पहले जांतियॉ समाज में व्यक्ति का स्थान निर्धारित करती थी लेकिन आधुनिक युग में व्यक्ति अब योग्यता, शिक्षा,राजनैतिक शक्ति एवं सम्पत्ति के आधार पर व्यक्ति का समाज में स्थिति निर्धारित होने लगी है ।

नगरीय समाज में जाति का कोई विशेष महत्व नही रह गया है। यहॉ जातीय सस्तरण का प्रभुत्व होता है, नगरों में जातिगत सस्तरण का अभाव पाया जाता है। वर्तमान समय में नगरों में वर्गवाद का बोलबाला है। आज व्यक्ति एक विशेष वर्ग में रहने के कारण वह अपने वर्ग को महत्वपूर्ण स्थानाा देता है।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप नगरों में जाति ने वर्ग का रूप ले लिया है । जिससे यहाँ जातिगत भेद भाव लगभग समाप्त हो गया है

राजनीति में ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं की भागीदारी– ग्रामीण समाज में महिलाऍ राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। देश की आबादी में जनसंख्या का लगभग आाधा हिस्सा महिलाओं का है। भारत गॉवों का देष है। इसलिए अधिकांश जनसंख्या गॉवों में निवास करती हैं आधुनिकीकरण के प्रक्रिया के फलस्वरुप राजनीति में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हुई है। ग्रामीण परिवेश में महिलाओं की स्थिति पहले की अपेक्षा आज ज्यादा सशक्त हुई है। आज राजनीति में महिला प्रतिनिधियों की अधिक भागीदारी देखने को मिल रही है।

पंचायतीय राज व्यवस्था ने महिलाओं की स्थिति को और सशक्त बनाने का कार्य किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर महिला जनप्रतिनिधि शिक्षा के अभाव में अनपढ़ हैं वर्तमान समय में ग्रामीण शिक्षा में प्रौढ़ शिक्षा एवं अन्य ऐसे

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ही कार्य क्रमों का संचालन करके उन्हें शिक्षित किया जा रहा है। वे अपने कार्यों एवं दायित्वों के प्रति सतर्क हुई है। हमारे देश में 74 वॉ संविधान संशोधन के माध्यम से राजनीति में 33 प्रतिशत महिलाओं की निश्चित भागीदारी सुनिश्चित की गयी है। इसके फलस्वरूप देश के विभिन्न राज्यों में संवैधानिक संशोधन द्वारा महिला जनप्रतिनिधियों की स्थिति सशक्त हुई है ।

नगरीय समाज में वर्तमान समय में राजनीति में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती हैं। नगर में महिलाऍं विभिन्न राजनैतिक दलों बढ़– चढ़ कर हिस्सा ले रही है। ग्रामीण समाज की अपेक्षा नगरों में यह अधिक देखने को मिलती आज विभिन्न राजनैतिक पदों पर नगरीय महिलाऍं अपना स्थान सुनिश्चित की है । पहले की अपेक्षा आज महिलाऍं राजनीति में सक्रिय भागीदार बन रही हैं। यह भागीदारी चाहे नगर स्तर की हो अथवा महानगर स्तर पर विधान सभा से लोक सभा स्तर तक यह भागीदारी देखने को मिल रही है।

खान–पान एवं रहन–सहन– ग्रामीण समाज में लोग परम्परागत व्यवस्था का अनुशरण करते थे ग्रमीण भारत के संदर्भ में देखा जाय तो जमीन पर बैंठ कर भोजन करने की परम्परा थी। भोजन पेडों के पत्ते से तैयार थालियों में या विभिन्न प्रकार के धातु से निर्मित थालियों में परोसा जाता था। कुछ जातियाँ विशेष कर ब्राहम्णों में भोजन एक धार्मिक कृत या भोजन बनाते समय महिलाओं को कर्म–काण्ड की दृष्टि से पवित्र होना आवश्यक होता था। क्योकि भोजन का पहले पारिवारिक देवता को पहले भोग लगाया जाता था। पुरुश कुर्ता–कमीज उतार कर रेश्मी धोती या चादर पहनते थे या सुती धोती या चादर पहन कर भोजन करते थे। जूठी पत्तलों के स्थान को गोबर से लिपकर पवित्र किया जाता था। गाँवों में कच्चा एवं पक्का भोजन की भी व्यवस्था देखने को मिलती थी। लेकिन वर्तमान समय में गाँव भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित हुआ है। आज लोग भोजन संबन्धी परम्परागत निषेधों के कमजोर पड जाने के कारण गाँवों में उच्च एवं निम्न जातियाँ एक याथ बैठ कर विभिन्न आयोजनों में भोजन कर रही है। वर्तमान अवस्था में ग्रामीण महिलाएँ भी उल्टे पल्ले की साड़ी पहनती है और ऊची शोल की सैंडिल, एवं शरीर से सटे हुए वस्त्रों का प्रयोग धड़ल्ले से करनें लगी हैं

नगरीय समाज में खान – पान की व्यवस्था ग्रामीण समाज से विलकुल हटकर देखने का मिलती है। आज नगरों में लोंग कुर्सी एवं मेज पर भोजन करना पसन्द करते हैं। भोजन में विभिन्न प्रकार के निषेधों को नही मानते हैं। भोजन में आमिस एवं निरामिस दोनों स्थितियाँ देखने को मिलती हैं। महिलाएँ नगरों में स्कूटर और कार भी चलाती हैं। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित विभिन्न प्रकार के शहरी परीधानों को महत्वपूर्ण स्थान देती हैं। महिलाऍं नगरों में बाल कटवाने के लिए ब्यूटी पार्लरों में जाती हैं। नगरों में भोजन विभिन्न प्रकार के भौतिक उपकरणों जैसे– प्रेसर कूकर, हीटर एअरकन्डीसर इत्यादि उपकरणों का तीब्र गति से उपयोग किया जा रहा है। नगरों में भोजन खड़ा होकर एवं रसोई घर में चप्पल पहन कर भोजन बनाया जा रहा है। पानी मिट्ट के बर्तन के स्थान पर अब फ्रीजों में ठण्डा किया जाने लगा है।

ग्रामीण समाज में संचार के साधनों का प्रयोग भी देखने को मिल रहा है। यह आधुनिकीकरण के फलस्वरुप ही सम्भव हुआ है। आज हम सूचना तथा संचार के युग में हम रह रहे हैं। गाँवों में आज संचार के प्राचीन एवं नवीन साधनों का प्रयोग धडल्लें से किया जा रहा है। गाँवों में संचार के साधन में रेडियों एवं टी0 वी0 का प्रयोग देखने को मिल रहा है। सूचना एवं जनसंचार के माध्यम से गाँवों में भी अब नयी–नयी संचार प्रौद्योगिकी का प्रयाग देखने को मिल रहा है। वर्तमान अवस्था में गाँवों में इण्टरनेट, मोबाइल का प्रयोग ग्रामीण समाज के लोग धडल्ले से करते देखे जा रहे है। गाँवों में परम्परागत संचार के साधनों का प्रयोग धीरे–धीरे विलुप्त होता जा रहा है। आज व्यक्ति हाथ से लिखें पत्रों का प्रयोग बहुत कम कर रहे है, जिनका स्थान विभिन्न प्रकार दूर संचार के साधनों ने लिया हैं।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*